Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भवभूति के नाटक मालती-माधव की समीक्षा

डॉ. पी.एस.बघेल*

* एसोसिएट प्रोफेसर, पीएम एक्सीलेंस शहीद भीमानायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महाविद्यालय,बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भवभूति दक्षिणापथ में विदर्भ अर्थात् आधुनिक बरार के अंतर्गत पद्मपुर नामक नगर के निवासी थे। उनका गोत्र काश्यप था तथा बे कृष्णायजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा को मानते थे।

भवभूति के वास्तविक नाम को लेकर विद्धानों में पर्याप्त भेदभाव दिखाई देता है। भवभूति के टीकाकार जगद्धर और त्रिपुरारि ने मालती माधव प्रकरण में पद्मावती को ही पद्मपुर माना है।

जनरल कनिंघम, प्रो. वी.वी. मिराशी ने पद्मपुर (विदर्भ) में ही अपना निवास बताया है। डॉ. काणे भी प्रो. मिराशी के मत से सहमत है। डॉ. भाण्डारकर जगद्धर के मत से विरुद्ध है।

कतिपय आलोचकों ने भवभूति का जन्म स्थान चंद्रपुर (चांदा) के आसपास कहीं रहा होगा। उनके अनुसार यहाँ भी कृष्णयजुर्वेदी तैत्तिरीय शाख्याध्यायी मराठी ब्राह्मणों के 'कुल' वर्तमान में है। अत: संक्षेप में यही कहा जाता है कि बरार क्षेत्र में पद्मपुर को ही उनका जन्म स्थान माना है। जहाँ दक्षिण में गोदावरी नदी का उल्लेख है इसे पद्मपुर को जन्म स्थान माना गया है,- मालतीमाधव के नवम अंक में सिंधु नामक नदी का वर्णन है जिसमें गोदावरी नदी का उल्लेख है। भवभूति के तीनों नाटकों में दक्षिण के वनों, नदियों तथा स्थानों का वर्णन हैं।

भवभूति के दूसरे नाम के विषय में यही चर्चा है कि 'उम्बेक' भी भवभूति के ही नाम है। अनेक दार्शनिक ग्रथों में कई जगह भवभूति और 'उम्बेक' एक ही समझने की चेष्टा की गई है। डॉ. काणे ने कई प्रमाणों के आधार पर दिखाया है कि मण्डन, सुरेश्वर, भवभूति, विश्वरूप एवं उम्बेक एक ही स्थान मान लिये गये हैं।

भवभूति एवं उम्बेक एक ही व्यक्ति है अथवा दो, इसके संबंध में कई विद्धानों ने अपने-अपने मत दिये हैं। डॉ. भाण्डारकर ने दोनों को अभिन्न होने में सन्देह किया है।

भवभूति की शैली के परीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि वाक्य रचना में समास का महत्व काफी बढ़ गया था, संश्लिष्ट वाक्य प्राय: लंबे-लंबे लिखे जाते थे, भाषा की स्वाभाविक गति पर पाण्डित्य का बोझ चढ़ चुका था। भाव संक्षेप के स्थान पर विस्तार को महत्व दिया जाने लगा था। निश्चित रूप से शैली के इन सारे लक्षणों की परिणति बाणभट्ट की गद्य-शैली में देखने को मिलाती है।

भवभूति के तीनों नाटकों में विशेष रूप से मालती माधव में कई गद्य वाक्य बाणभट्ट की शैली की तरह दिखाई दिये हैं। बाणभट्ट का समय सातवी शताब्दी का पूर्वार्ध और दण्डी का भी सातवी शताब्दी के आस-पास ही रखा गया है, अत: भवभूति का समय इसके बाद ही ठहरता है। भवभूति ने अपनी कृतियों में भले ही किसी कवि आदि के नाम का उल्लेख नहीं किया है, फिर भी उनके नाटक, विशेष रूप से उत्तररामचरित में कालिदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मालती-माधव में एक जगह कामन्दकी के मुख से कौशिकी शकुन्तला एवं दुष्न्यन्त तथा अप्सरा उर्वशी एवं पुरुरवा के परस्पर प्रणय भाव का उदाहृत किया है। स्पष्टत: यहाँ कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल एवं विक्रमोर्वशीय नाटकों की ओर संकेत किया गया है। इसी प्रकरण के नवम अंक में विरही माधव मेघ के द्धारा अपनी प्रिया मालती के पास संदेश भेजता हुआ दीखता है। यहाँ न केवल मेघदूत के भावों का स्पष्ट अनुकरण प्राप्त होता है, वरन् उसके प्रसिद्ध छन्द मंदाक्राता की भी अनुकृति पाई जाती है। अत: भवभूति कालिदास के बाद अवतीर्ण हुए, यह स्पष्ट है।

बाणभट्ट का समय निश्चित है। वे स्थानीश्वर एवं कान्यकुब्ज के विद्धान् सम्राट् हर्षवर्धन की राज्यसभा में महाकवि के रूप में विराजमान थे। हर्ष का समय 606 ई. से 648 ई. तक रहा है अत: बाणभट्ट का समय की सातवी शती के पूर्वार्ध माना जा सकता है। यह समय भवभूति के समय की पूर्व सीमा के रूप में रखा जा सकता है। अर्थात् भवभूति सातवी शती के पूर्वार्ध में निश्चित रूप से विद्यमान नहीं थे। उनके समय की उत्तरी सीमा का ज्ञान आचार्य वामन की काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में उनके दो श्लोक 38 तथा 54 के उदारण से होता है। डॉ. काणे के अनुसार वामन का समय आठवी शताब्दी के आसपास माना जाना चाहिए। अत: इस हिसाब से भवभूति को आठवी शती के बाद नहीं रखा जा सकता।

राजशेखर की पुस्तक 'काव्यमीमांसा' में मालती-माधव के दो श्लोकों के उद्धृत किया है तथा अपनी 'बालरामायण' में अपने को वाल्मीकि, भर्तृमेंठ में 6 तथा भवभूति का समय घोषित किया है। राजशेखर कनौज के राजा महेन्द्रपाल के उपाध्याय थे। महेन्द्रपाल का समय 903 ई. तथा 907 ई. के प्राप्त हुए है। राजशेखर के बाद अन्य आचार्यों ने भी अपनी रचनाओं में भवभूति के उदाहरण दिये हैं। अत: अन्तत: भवभूति का समय सातवी शती के पूर्वार्ध के बाद आठवी शती के अन्तभभाग से पूर्व रहा होगा।

कान्कुब्ज के राजा यशोवर्मा का उल्लेख आया है जो कल्हण के अनुसार कवि वाक्पतिराज तथा भवभूति के आश्रय दाता रहे। इस प्रकार भवभूति का समय आठवी शताब्दी कि मध्यभाग में निश्चित होता है।

यमालती-माधव की समीक्षा

कामन्दकी एक अवलोकिता की बातचीत के अनुसार मालती एवं माधव के पाणिग्रहण की योजना पर विचार करती है। मालती के पिता भूरिवसु सम्प्रत्ति पद्मावतीश्वर के मंत्री है तथा माधव के पिता देवरात विदर्भ राज के मंत्री है।

कामंदकी को मालती एवं माधव के विवाह संबंधों को सफल बनाने के निर्देश मिल चुके थे। लंवगिका से यह जानकर कि मालती पहले से ही अपने भवन की ओर आते देखकर उनके प्रति आकृष्ट हो गयी है (1:16)। प्रेम विह्वल होकर मालती ने माधव का एक चित्र अंकित किया है। मालती के अनुराग से माधव को अवगत कराने के उद्देश्य से मालती की धाय की पुत्री लवंगिका इस चित्र को माधव के सेवक कलहंस की प्रेयसी मन्दारिका को दे देती है, ताकि यह चित्र स्वयं माधव तक आसानी से पहुँच जाय। माधव मालती के प्रति आकृष्ट हो गया है-मालती अपनी सहेलियों के बीच निकट से माधव के प्रति आसक्ति प्रकट करती है। कलहंस के सामने मालती द्धारा अंकित माधव का चित्र अर्पित करता है। इस चित्र को देखकर मालती के प्रेम के संबंध में दोनों मित्रों की शंका मिट जाती है।

भवभूति का साहित्यिक महत्व सर्वोपरि है। मालतीमाधव भवभूति का कल्पना- प्रसूत नाटक है। इस संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि यह नाटक लौकिक है। नाटक में उदात्त या असामान्य वस्तु से भिन्न प्रकरण की वस्तु सामान्य लोक जीवन के चित्र प्रस्तुत करता है। मालती माधव नाटक क्लेश प्रधान है। जिसमें आनंद भाव और दु:ख भाव दोनों का संमिश्रण है।

दुष्यन्त एवं माधव दोनों ही अपने-अपने ढंग से क्रमश: शकुन्तला एवं मालती से प्रणय निवेदन करते हैं, किन्तु एक की प्रार्थना में समाज का उच्चतर वर्ग का दिखावटीपन, कपट एवं व्यभिचार लक्षित होता है तो दूसरी ओर प्रार्थना में सामान्य लोकजीवन की सच्चाई, निश्छलता एवं उदारता जैसे भावों की सहज व्यंजना भी है। माधव के रोमांटिक जीवन की यह बहुविधि सहजता है जो हमारे मन के निकटतर लाती है।

मालती माधव की कथा वस्तु में कई सूत्र परिलक्षित होते हैं। कथा सरित्सागर एवं वृहत्कथा मंजरी कहानियाँ ऐसी हैं जो मालती माधव की कथावस्तु को बड़ी दूर तक प्रभावित करती हैं। इनमें पहली कहानी शोभावती नगरी के यशस्कर नामक ब्राह्मण के पुत्र तथा विजय सेन नामक क्षत्रिय युवक की बहन मदिरावती के परस्पर अनुराग को आधार लेकर चलती है। यह कहानी माधव एवं मालती की प्रेम कथा का स्पष्ट आधार मानी जा सकती है। यशस्कर के पुत्र का विशाला नगरी में एक आचार्य के घर अध्ययन करना, उसके प्रेम में दीवानी मदिरावती का अपने प्रणय के प्रथम प्रतीक के रूप में अपनी धात्री के द्धारा अपने प्रेमी को मालती-पुष्पों की माला अर्पित करना, मदिरावती के पिता का एक दूसरे क्षत्रिय युवक के साथ अपनी पुत्री के विवाह के लिए प्रतिश्रुत होना, निराश प्रेमी का आत्महत्या के लिए तत्पर होना, मंदिर की मूर्ति के पीछे छिपे हुए प्रेमी का आत्महत्या करने को उद्यत मदिरावती के सामने प्रकट होना और उसे लेकर मंदिर के पिछले दरवाजे से निकल भागना, प्रेमी के मित्र का मदिरावती के ही वैवाहिक परिधान पहनकर सनध्या के छुटपुटे में मदिरावती के घर पहुँचना और वहाँ अकस्मात् मदिरावती को बिदाई देने आई हुई उसकी एक ऐसी सखी से उसका साक्षात्कार होना जिसे उसने कुछ ही समय पूर्व शंखपुर नामक नगर में एक हाथी के आक्रमण से बचाया था और इसी क्रम में दोनों का एकदूसरे के प्रति प्रेम हो चला था, एक दूसरे से परिचित होकर इन दोनों का भी गुप्त द्धार से नगर से कुछ ही दूरी पर अवस्थित जंगल में भाग जाना और किसी अग्रहार या मठ में विवाहित होना-यशस्कर-पुत्र तथा उसके मित्र की कहानी की ये सारी घटनाएँ माधव एवं मकरन्द तथा मालती एवं मदयन्तिका के प्रेम जीवन की कितनी निकटता खड़ी है, यह समझना कठिन है।

भवभूति की कल्पना का पहला चमत्कार इस कथा के मनोविज्ञान को पूर्णत: बदल देने में है। अपने परिष्कृत रूप में मालती और माधव के आदर्शोन्मुख यथार्थवादी चरित्र की कोई भी संगति वासना के गर्त में गिरी हुई मदयन्तिका एवं उसके प्रणयी जीवन में नहीं खोजी जा सकती है। भभवभूति ने कथानक को लक्ष्पूर्ण बनाने का भरसक प्रयास किया है।

माधव के चरित्र में न केवल मदिरावती के प्रेमी ब्राह्मण युवक के रोमांस तथा विदूषक के वीरोचित कृत्यों का समाहार हुआ है, अपितु यह समाहार सोद्देश्य, प्रखर, एकान्वित एवं कलात्मक सर्जना बनकर प्रकट होता है।

अपने पण्डित्य एवं वैदग्ध के इन सारे निर्दिष्ट लक्षणों को किसी एक स्थान पर निबद्ध करना वास्तव में यह कठिन कार्य है। कवि ने मानो इस अपूर्ण कलात्मक साहस की चुनौती को स्वीकार करता है। कवि की प्रतिज्ञाओं के प्रकाश में जब मालती माधव को देखते हैं तो वास्तव में इसके विलक्षण वृत्त पर मुग्ध होना पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अभिज्ञान शाकुन्तल, एम.आर. काले, मुंबई 1957
2. उत्तररामचरित- डॉ. पी.वी. काणे, मोतीलाल बनारसी दास 1962
3. कालिदास और भवभूति-द्धिजेन्द्र लाल राय, मुंबई
4. काव्य प्रकाश पुष्पत्तनम्।। 1911,
5. महाकवि भवभूति, डॉ. गंगा सागर राय चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1965
6. महाकवि भवभूति-श्रीमती रमा पाण्डेय, साहित्य रत्न भंडार, आगरा 1967
7. मालती माधव-निर्णय सागर प्रेस 1936
8. मालती माधव, आर.जी. भंडारकर, बंबई,
9. रस-सिद्धान्त- डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लि. हाउस, दिल्ली 1964
10. वालमीकि रामायण-गीता-प्रेस गोरखपुर सं. 2017
11. हिन्दी साहित्य दर्पण-चौखम्बा विद्याभभवन वाराणसी

****